महाकवि भासकालीन संस्कृत भाषा

डॉ. कविता कुमारी

संस्कृत साहित्य कानन में सर्वत्र रस–राग समन्वित प्रसूनों के ही दर्शन होते हैं, परन्तु संस्कृत नाट्य–साहित्य के उपवन में महाकवि भास जैस पुदप के प्रस्फुटन से सारा नाट्य साहित्य जगत् सुगंधित व सुवासित हो गया और महक उठा।

भास के रूपकों में प्रयुक्त संस्कृत भाषा अत्यन्त सरल एवं सुबोध है। भाषा में कुछ आवानीय प्रयोग भी मिलते हैं जिनका एक कारण हो सकता है कि भास के समय में संस्कृत लोक भाषा रही होगी या कम से कम समाज के उच्च वर्ग के लोगों के लिए यह दैनन्दिन व्यवहार की भाषा रही होगी किन्तु निम्न वर्ग के लोगों के लिए तथा शिक्षा से विपरित नारियों की भी प्रयोग भाषा प्राकृत रही होगी। उपलब्ध नाट्य साहित्य में भास के ही रूपक सर्वप्रथम आते हैं। जिनमें भारत की इस मान्यता का, कि स्त्रियों और अनुदाव्तकोटि के लोगों का पाठ्य प्राकृत भाषा हो, निर्वाह या भास के ही द्वारा किया गया है। प्राकृतों के प्रयोग में भास में विविधता है और साथ ही सरलता का उचित समावेश है। भास की भाषा का सर्वाधिक विशिष्ट पक्ष है– प्रसंगानुकूल शब्दावली का संयोजन और पात्रानुस्प एवं रसानुस्प भाषा विधान। भास के गंभीर भावों की अभिव्यक्ति के लिए कोमल वर्णों का विन्यास किया है यहाँ संक्षेप में भास की संस्कृत और प्राकृत का प्रयोग वैशिष्ट्य निरूपित करेंगे।

भास की संस्कृत भाषा में सन्धि विषयक पाणिनीय नियमों का उल्लंघन देखने को मिलता है। अपन्त्याधिपतेः, पुत्रोति आदि प्रयोग व्याकरण सम्मत नहीं है। परस्मैपद के स्थान पर कुछ धातुओं के प्रयोग में आत्मनेपद के रूप मिलते हैं। यथा– गमिष्यामि के स्थान पर गमिष्ये, 'गर्जसि' के स्थान पर गर्जत, पश्यसि के स्थान पर दृश्यते, पृच्छसि के स्थान पर पृच्छते, भ्रस्यति के स्थान पर भृस्यते, रूद्रद्यति के स्थान पर रूह्यते आदि। कहीं आत्मनेपद जहाँ होना चाहिए, वहाँ परस्मैपद का प्रयोग है। जैसे आपृच्छस्व के स्थान पर आपृच्छ, उपलप्स्यते के स्थान पर उपलव्स्यति, परिवजस्व के स्थान पर परिष्वण आदि। ण्यन्त प्रयोगों में भी अपाणिनीय प्रयोग देखने को मिलते हैं, यथा– श्रवति, बीजात तथा विमोक्तुकामः आदि। इसी प्रकार कुछ क्रिया पदों के अंशु प्रयोग मिलते हैं। यथा – रूदन्ति और गृह्य आदि। समास में भी कुछ अनियमित प्रयोग देखने को मिलते हैं, यथा पद्य में सर्वराज्ञ और गद्य में काशीराज्ञे। इसी तरह पद्य में व्यूदोरत और तुल्यधर्म ऐसे प्रयोग मिलते हैं। एक ही खण्ड वाक्य में चेत् और यदि दोनों का प्रयोग कई स्थानों पर मिलता है। सामान्य क्रिया के अर्थ में प्रेरणार्थक क्रिया के आतृप्तिलोपी रूप यथा– प्रत्याययति, प्रेरणार्थक रूप में समाश्वतितुम् तथा पु. संज्ञा के रूप में बुध आदि अंशु प्रयोग है।

भास की संस्कृत बड़ी ही सरल है, उनके बड़े–बड़े समस्त पदों का प्रयोग नहीं होता, वाक्य छोटे–छोटे हैं। इनकी संस्कृत भाषा में स्वाभाविक प्रवाह है और वे मुहावरों का अधिक प्रयोग करते हैं। नाट्य साहित्य के लिए सरल भाषा ही उपर्युक्त होती है। भास के रूपकों की भाषा इस मान्यता के अनुरूप है। इनकी भाषा में शब्द स्वल्प होते हैं किन्तु भावाभिव्यक्ति में कोई त्रुटि नहीं होती। अलंकार विहीन होने पर भी भाषा में अभिव्यंजन की शक्ति सम्पूर्णतः वर्तमान

• **पी.एच.डी. (संस्कृत), स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार.**

है। रूपकों में संवाद तत्व उसकी रोचकता तथा रसवत्ता की अभिवृद्धि करते हैं। इस दृष्टि से भास के रूपकों में जो विशेषताएँ परिलक्षित होती है, वे अन्यत्र दुर्लभ हैं। भास की संस्कृत भाषा दैनन्दिन बोलचाल की भाषा रही होगी, क्योंकि प्रतिदिन के उपयोग के अनेक शब्द इसमें देखने को मिलते हैं। स्वीकृत्यर्थक आम् और वात्म् का प्रयोग, यदि और चेत् का प्रयोग कुशल प्रश्न के लिए 'सुखर्मारूय' आदि का प्रयोग वस्तुतः भास की संस्कृत को यदि हम स्वच्छन्दवाहिनी निर्झरी माने तो कालिदास की भाषा को हरिद्वार की गंगा मानना होगा। भास की भाषा की स्वाभाविकता कालिदास की भाषा में नहीं। भास की भाषा पर्वत से निकलने वाले झरने के समान स्वच्छन्द होते हुए भी सरल है, परन्तु कालिदास की भाषा गंगा की धारा के समान संयत और सुन्दर है।

कुछ उदाहरण दृष्टव्य है – कथं लम्बसटः सिहो मृगेन विनिपात्यते, नो व्याघ्रं मृगशिशव : प्रधर्षयन्ति (प्रतिमानाटक 5/18) व्याघ्रानुसार चकिताहरिणी (चारूदत्त, – 1/9) साहसेश्वलु श्रीर्वसति

महाकवि भास के पद्यर्थों में सरलता दृष्टव्य है –

पद्मावती बहुमता यद्यपि स्पशीलमाधुर्यैः। वासवदत्ता वहवं नतु तावन्मे मनोहरति ।।

तत्रयास्त्राकि यात्रौसी वर्त्ततते लक्ष्मण प्रियः। नायोदया तमबिनायोध्या तायोध्या यत्रराघवः।।

यहाँ मधुर काव्य भाषा का प्रयोग भास की भाषा शक्ति का परिचायक है। अनुप्रास युक्त सरल संस्कृत के कुछ प्रयोग सहृदयहृदयाहलादक है, यथा– सजल जलघर, सनीर नीरद, कूलद्वयंहन्ति, मदने नारी, कूलहृदयं सुध्या जलानदीव (प्रतिमानाटक, अंक–3)।

हृदयेनेह मत्रडेघ द्विघाभूतेन गच्छति ।

यथा नभसि तोय च चन्द्रलेखा द्विघा क्रिता ।। (बालचरितम् 1/3)।

सुक्तियों से युक्त भास की संस्कृत संस्कृत भाषा के अध्येता के लए सर्वथा ग्राहय है, कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं –

गुणानां वा विगालानां सत्कारणांद नित्यज्ञः।

कत्तारिः सुलभा लोके विज्ञानरश्य दुर्लभा ।। (स्वप्नवासवदत्ता, 4/9)।

विवाहानाम बहुशः परिच्छ कर्त्तव्या भवन्ति ।

ऐसा प्रयोग भास की संस्कृत भाषागत विशेषताओं को विशेषतः उनमें निहित अर्थवत्ता को स्पष्ट करते हैं। महाकवि भास संस्कृत भाषा के चतुर चितेरे कवि हैं। सरल व अर्थपूर्ण संस्कृत भाषा का प्रयोग इनकी लेखनी को ग्राहय है, जो जन–सामान्य के लिए समादरणीय है।

संदर्भ :

- चारूदतम्, मोतीलाल बनारसी दास
- बालचरितम्, चौखम्बा प्रकाशन
- प्रतिमानाटक, मोतीलाल बनारसी दास
- स्वप्नवासवदत्ता, मोतीलाल बनारसी दास